मॉड्यूल 'ख'– दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

(एम.एच.डी.–17 से 20 तक)

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–17

'भारत की चिंतन परंपराएं और दलित साहित्य'

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी.–17/टी.एम. ए/2021– 2022

कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः 10X4= 40

(क) ''सत्येषु दुःखादिषु दृष्टरार्या सम्यग्वितर्कश्च पराक्रमश्च।

इदं त्रयं ज्ञानविधौ प्रवृतं प्रज्ञाश्रयं क्लेशपरिक्षयाय।।''

(ख) यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यतां तां प्रचक्ष्महे।

स प्रज्ञप्तिरूपमादाय प्रतिपत्सैव मध्यमा ।।

(ग) जहॉ देखता हूँ, वहॉ तुम हो,
सब में तुम्हारा विस्तार है।
विश्व के बाहु तुम हो,
विश्व के नयन तुम हो,
विश्व के मुख तुम हो,
विश्व के पैर तुम हो,
हे कूडल संगम देव।

(घ) गुरू षोजौ गुरदेव गुरू षोजौ, बदंत गोरा ऐसा।
मुक्ते हौइ तुम्हें बंधनि पड़िया, ये जोग है कैसा।।
चांम ही चांम धसंता गुरदेव दिन दिन छीजै काया।
होठ कंठ तालुका सोषी, काढ़ि मिजालू षाया।।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिएः 10X4 =40

(क) ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की स्थिति पर प्रकाश डालें।

(ख) बुद्ध दर्शन में अनात्मवाद के सिद्धांत के महत्व पर प्रकाश डालें।

(ग) 'चार्वाक दर्शन' का स्वर मानवतावादी है, स्पष्ट करें।

(घ) कन्नड की भक्ति साहित्य परंपरा का परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए: 5**X**4**=** 20

(क) अश्वघोष की कृतियों की भाषा शैली, वस्तु योजना तथा प्रकृति–चित्रण पर प्रकाश डालें।

(ख) आर्य वसुबंधु की रचनाओं पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें।

(ग) तेलुगु के प्रमुख संतों का परिचय दीजिए।

(घ) निर्गुण संतों के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

———

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी. –18

(दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप के सभी खण्डों पर आधारित**)**

सत्रीय कार्य कोड एम.एच.डी.–18/टी एम ए/2021–22

कुल अंक 100

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 'दस' प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10**X**10**=** 100

1. दलित चेतना से क्या अभिप्राय है? इसकी प्रेरणा के स्त्रोत क्या है? सविस्तार उल्लेख करें।
2. दलित साहित्य आंदोलन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें।
3. 'सत्यशोधक समाज' के गठन की पृष्ठभूमि बताते हुए उसके सिद्धांतों का मूल्यांकन करें।
4. भारतीय जाति–व्यवस्था के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. आंबेडकर के विचारों का मूल्यांकन करें।
5. अछूतानन्द के सामाजिक सुधार आंदोलन पर प्रकाश डालिए।
6. हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' कविता में अभिव्यक्त दलित चेतना के पहलुओं को स्पष्ट कीजिए।
7. किसान जीवन में क्रांति लाने हेतु महात्मा फूले द्वारा सुझाए गए महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित कीजिए।
8. 'हिंदू कोड बिल' वास्तविक रूप में भारतीय हिंदू स्त्री के लिए प्रगत भविष्य लाने वाला संवैधानिक कानून है।' इस तथ्य की विवेचना कीजिए।
9. पेरीयार ई.वी. रामास्वामी नायकर के आत्मसम्मान आंदोलन की क्रांतिकारी भूमिका स्पष्ट करें।
10. 'नारायण गुरू धर्म परिपालम योगम' संस्था के योगदान पर टिप्पणी लिखिए।
11. 'दलित' शब्द का अभिप्राय क्या है? साहित्य के साथ जुड़कर वह किस तथ्य को अभिव्यक्त करता है?
12. दलित साहित्य के लिए अलग सौंदर्यशास्त्र क्यों जरूरी है?
13. दलित आंदोलन में दलित साहित्य की भूमिका स्पष्ट कीजिए?
14. दलित साहित्य में आक्रोश एवं विद्रोह का स्वर क्यों है?

– – –

सत्रीय कार्य एम.एच.डी–19

हिंदी दलित साहित्य का विकास

(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित**)**

सत्रीय कार्यः एम.एच.डी.–19/टीएमए/ 2021–22

कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्ही दो की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

10**X**2**=** 20

(क) मेरे और तुम्हारे बीच
एक रेतीला ढूह है
जो किसी अंधड़ का इंतजार करने से पहले
किसी भी वक्त फट सकता है
जिसके गर्भ से निकलेंगे
घृणा में लिपटे कुटिल शब्द
जिन्हे जलना होगा
दहकती भट्ठी में
रोटी की महक में बदलने के लिए।

(ख) यदि वेद–विद्या पढ़ने की करो धृष्टता,
तो काट दी जाय तुम्हारी जिह्वा
यदि यज्ञ करने का करो दुस्साहस,
तो छीन ली जाय तुम्हारी धन सम्पत्ति,
या, कत्ल कर दिया जाय तुम्हें उसी स्थान पर।
तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?

(ग) वर्णाश्रम की जॉघ चाटने वाले
सतयुगी शासक अब
राजपथ के इर्द गिर्द बनी
मॉदों में घुस चुके हैं।।
पक रही है यहॉ
मृत इतिहास की जहरभरी
चाशनियॉ, उठाते हैं वे
जिन्दगी का हर लुत्फ
और समता भरे भारत के लिए
की गई हर लड़ाई को
कहते हैं जो व्यभिचार।।

(घ) मेरे बेटे के साथ
अपने बेटे को भेजो
दिहाड़ी की खोज में।
और अपनी बिटिया को
हमारी बिटिया के साथ
भेजो कटाई करने
मुखिया के खेत में।
शाम को थक कर
पसर जाओ धरती पर
सूँघों खुद को
बेटे को
बेटी को
तभी जान पाओगे तुम
जीवन की गंध को,
बलवती होती है जो
देह की गंध से।

(ङ.) मैं भागती हूँ–सब ओर एक साथ
विद्रोहिणी बन चीखती हूँ
गूंजती है आवाज सब दिशाओं में
मुझे अनन्त असीम दिगन्त चाहिए
छत का खुला आसमान नहीं
आसमान की खुली छत चाहिए!
मुझे अनन्त आसमान चाहिए!!

2. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 10**X**2**=** 20

(क) बालमन की यह खरोंच ग्रंथि बन गई थी। जब भी वह पच्चीस की संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिताजी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिवनारायण मिश्रा का गाली–गलौज करता लाल–लाल गुस्सैल चेहरा। सुदीप दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अंधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे–जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे, जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे।

(ख) ठाकुर ने सुना तो खोपड़ी जल उठी उसकी। लगा दिमाग में जितनी भी नसें हैं वे आपस में जुड़ गयी है और वे अब फटी कि तब। वह गुस्से से बड़बड़ा उठा– ''ससुरे चमार–भंगियों ने देखी कितना सर उठा रक्खा है.....? दस–बीस साल पहले तो मुँह में जबान ही जैसे न थी और अब कहते हैं गॉव में कोई ठाकुर–वाकुर नहीं.....।''

(ग) ''क्यों पिल पड़ते हो इस तरह खाने पर।'' बाद में हरखू ने उसे समझाने की कोशिश की थी, ''यह ठीक है कि हम लोग देवताओं की तरह धूप सुगन्ध और फल की खुशबू सूँघकर रह सकते। हमें एक पेट भात चाहिए ही चाहिए। लेकिन क्या इस तरह जलील होकर? यह भी ठीक है, हमें कभी बढ़िया खाना नसीब नहीं होता और बाबू लोगों के यहॉ किसी अवसर पर ही ऐसा खाना मिलता है।'' लेकिन गंगाराम ने बात काट दी थी। कहा था, ''काका, मैं सिर्फ पेट भरने के लिए नहीं खाता। मैं खा–खाकर इतना मोटा, इतना ताकतवर हो जाना चाहता हूँ कि मुझे जो लड़के रात–दिन चिढ़ाते रहते हैं– गंगाराम–नंगाराम कहके – मैं अकेले उन सबों को सबक सिखा सकूँ।''

(घ) ''क्या समझता है ये मस्टरवा साला, ब्राहाण हो गया जैसे भगवान। जो है वही अंतिम है। जो बच्चा पैदा हो गया है उसके बाद फिर बच्चे होंगे ही नहीं। सतयुग–द्वापर युग की बात करेगा। नहीं बदलेगा। समय की नब्ज पहचान कर चलो, नही तो ब्राहाण संस्कारी और छुआछूत के खोल में तड़प–तड़प कर मर जाएगा। समय पर परिस्थितियों से समझौता करो तभी खैर है। हवा का रूख बदल गया है, अब टाट–झोंपड़ा उड़ेगा देखना।''

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में लिखिए 10**X**4**=** 40

(क) 'परिवर्तन की बात' कहानी के माध्यम से वर्चस्ववाद और शोषण की परंपरा के संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

(ख) दलित कहानी की सोद्देश्यता पर विचार कीजिए।

(ग) दलित कहानी के सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकारों को निर्दिष्ट कर सोदाहरण विश्लेषण कीजिए।

(घ) दलित उत्पीड़न के संदर्भ में स्वानुभूति और सहानुभूति के सवाल को 'आमने–सामने' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

(ड़) 'अपने–अपने पिंजरे' के संरचनागत वैशिष्ट्य का उद्घाटन कीजिए।

(च) दलित आत्मकथनों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? सोदाहरण समझाइए।

(छ) डॉ. आंबेडकर का दलित समाज पर क्या असर पड़ा? दलित आत्मकथनों की रोशनी में इसकी व्याख्या कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए। 10**X**2**=** 20

(क) ''घृणा तुम्हे मार सकती है'' कविता के उद्देश्य पर टिप्पणी लिखिए।

(ख) 'जनपथ' कविता के संरचना शिल्प पर प्रकाश डालिए।

(ग) दलित कहानी तथा सामान्य कहानी के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

(घ) दलित स्त्री आत्मकथा के वैशिष्ट पर प्रकाश डालिए।

(ड़) 'प्रेमचंद तथा दलित कहानिकारो की कहानियों में मुख्य अंतर क्या है। स्पष्ट कीजिए।

———————

सत्रीय कार्य एम.एच.डी.–20

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य

पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित

सत्रीय कार्य : एम.एच.डी.–20 / टीएमए / 2021–22

कुल अंकः 100

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 200 शब्दों में संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10**X**4**=** 40

(क) नामांतर संघर्ष के अगली पंक्ति में
नारा देती 'नामांतर होना ही चाहिए'
पुलिस की लाठी हाथ पर झेलकर
हँसते–हँसते जेल में जाते हुए
पुलिस की गोली से शाहिद हुए
इकलौते बेटे के लिए कहते हुए
अरे, 'तुम भीमराव के लिए शहीद हुए
जन्म तुम्हारा सार्थक हुआ।'
पुलिस से कहते सुना मैंने

(ख) मैं अभी भी निषेधित मानव हूँ
सांस मेरी बहिष्कृत है
मेरी काटि को ताड़ के पत्तों से लपेट कर
मेरे मुंह पर उलगदान लटका कर
लोगों के बीच मुझे
असहा मानव– पशु बनाने वाले मनु ने
जब मेरे काले माथे पर जबरदस्ती से
निषेध का ठप्पा लगाया था
तभी मेरी समस्त जाति की
शनैः शनैः हत्या कर दी गई
अब नया क्या मरना?
यदि हमारी रहस्यमय मौतों को लिखा जाय
तो हमारी हत्याएं ही पत्रिकाओं की
सनसनीखेज सुर्खियॉ बनेगी
इस देश में कहीं भी खोद कर देखा जाय
तो हमारे कंकाल मिट्टी के कंठ से दिखेंगे।

(ग) घोड़ा नहीं जानता कि
वह पैरों से खोद सकता है धरती
दुलत्तियों से तोड़ सकता है
सवार का चेहरा
चबा सकता है चाबुक को
नरम हाथों सहित
तोड़ सकता है लगाम
गिरा सकता है
पीठ पर पड़ काठी को
कुचल सकता है
सदियों से सवार देह को
पर, घोड़ा तो अभी घोड़ा है
पंगु का पंगु है
न समझता है, ने सोचता है
बस, अपने आप को ही नोचता है

(घ) वह तो मेरा भाई है
या पराभव का दुश्मन?
उसके बच्चे तो सब हीरो बने फिरते
मेरे मैला ढोते, कचरा सुलटते
ये तो कैसा इंसाफ ळे मॉ
यह तो सरासर बेइमानी ळे मॉ
मुझे तो मेरे बाबा की वसीयत का
इत्ता सा भाग नहीं मिला
जैसे की मैं दुजारू
तू भी बहुत बेइमानी करती ळे मॉ

2. निम्नलिखित में से चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। 10**X**4**=** 40

(क) दलित साहित्य संबंधी बाबूराव बागूल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'जब मैंने जाति छुपाई' कहानी में अभिव्यक्त जातिभेद की जटिलता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) दलित साहित्य–आंदोलन में अर्जुन डांगले के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'कवच' कहानी का बाल चरित्र 'गौन्या' के मानसिक द्वंद्व पर टिप्पणी लिखिए।

(ड.) गुजराती दलित कहानी की पृष्ठीाूमि पर प्रकाश डालिए।

(च) डॉ. गुरूचरण सिंह राओ के जीवन और रचना पर प्रकाश डालें।

(छ) 'मशालची' के माध्यम से दलित मुक्ति संघष्ज्ञ की दिशा और दशा का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(ज) मराठी दलित आत्मकथनों में 'अक्करमाशी' की विशिष्टता को रेखांकित कीजिए।

(झ) 'जीवन हमारा' के आधार पर दलित जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सरोकारों का विवेचन कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्ही चार पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए। 5**X** 4**=** 20

1) तेलुगु दलित कविता की विशेषता

2) मॉ कविता में अभिव्यक्त दलित स्त्री का संघष्ज्ञ

3) 'प्उ' कविता में वर्णित जजमानी प्रथा

4) 'बिच्छू' कहानी की कथावस्तु

5) 'मोची' की गंगा' कहानी की भाषा

6) वेबीताई कांवले का जीवन परिचय

7) मशालची उपन्यास की भाषा

8) 'रोटले' की नजर लग गई' कहानी का उद्देश्य

———————— ————————